राजस्थान के अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षक मनोबल का अध्ययन

डॉ. जे.डी. सिंह* और डॉ शर्मिला यादव**

सारांश

''वर्तमान शोध राजस्थान के अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षकों के मनोबल व समायोजन का अध्ययन करने से संबंधित है। प्रस्तुत शोध के लिए शैक्षिक वातावरण मापनी, शिक्षक समायोजन मापनी, शिक्षक मनोबल मापनी व साक्षात्कार सूची का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में यह तथ्य सामने आये है कि अनुदानित शिक्षण महाविद्यालय गैर अनुदानित महाविद्यालयों की तुलना में विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी है।

प्रस्तावना

मानव का विकास उसके द्वारा निर्धारित किए गए उद्देश्यों की पूर्ति, प्रतिपूर्ति, पुनः निर्धारण, पुनः–पूर्ति आदि के परिप्रेक्ष्य में ही हुआ है। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इस स्थिति का दर्शन शिक्षा के औपचारिक संगठनों के रूप में होता है, जिनमें विद्यालय, महाविद्यालय, शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि प्रमुख है। प्रत्येक औपचारिक संगठन में उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि उस संगठन के कार्यकर्ता में समर्पण का भाव हो तथा कार्य करने के लिए उचित दशाएं हो। मात्र लक्ष्य निर्धारण अथवा लक्ष्य आधारित कार्यक्रम ही सफलता के लिए पर्याप्त नहीं है। इससे वातावरण नीरस अथवा कठोर हो जाता है, जिससे कार्यकर्ता असंतुष्ट होकर कार्य करता है। वह अपनी पूरी क्षमता का उपयोग न करके आधे मन से कार्य करता है, जिसका परिणाम संगठन की असफलता के रूप में सामने आता है। इतना ही नहीं, व्यक्ति का कौशल, कार्य दक्षता और मानसिक संवेदनशीलता भी एक जैसी नहीं होती। कार्यकुशलता को प्रभावित करने वाले तत्वों में भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण, मशीन एवं उपकरण, कार्य व्यवहार आदि प्रमुख है। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि कार्यकर्ताओं को कार्य परिस्थितियों के अनुरूप उचित वातावरण प्रदान किया जाए तथा उनके मनोबल को ऊंचा बनाए रखा जाए, जिससे उस शिक्षा संगठन मजबूत बनाकर उचित शैक्षिक वातावरण प्रदान किया जा सके।

शोध औचित्य

किसी भी समस्या पर शोध कार्य करने से पूर्व यह देखना अत्यावश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से उस समस्या का हल कितना आवश्यक है? अर्थात् उस समस्या पर शोध कार्य किया जाए तो इससे समाज एवं राष्ट्र को कितना एवं क्या लाभ होगा?चूंकि, शिक्षा सामाजिक विकास का मूलाधार है। बिना शिक्षा के विकास किया जाना असम्भव है। समुचित शिक्षा के लिए उत्तम शैक्षणिक पर्यावरण आवश्यक है, जिसमें उपस्थित बाधाओं को दूर कर शिक्षानुकूल बनाया जा सके। शिक्षा के आयोजन में मात्र विद्यार्थी ही महत्वपूर्ण नहीं है अथवा इन पर्यावरणीय अवरोधों का ज्ञान मात्र विद्यार्थी तक ही सीमित होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन सभी आयोजकों को इसका ज्ञान होना आवश्यक है जो शिक्षा के आयोजन से सम्बन्धित है। बालक से भावनात्मक लगाव स्थापित कर उनकी मनःस्थिति को समझने एवं तदनुरूप नियोजित व्यवस्था प्रदान करना, अध्यापक के ही वश में है। क्योंकि प्रशिक्षक महाविद्यालय का वातावरण, समायोजन स्थिति व अकादमिक वातावरण मानसिकता का निर्माण करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुझावों से इस स्थिति में सुधार होगा, जिसका प्रत्यक्षत् लाभ इनमें कार्य करने वाले शिक्षा–शिक्षकों को मिल सकेगा।

इससे योग्य अनुभवी प्रशिक्षकों तथा उपयुक्त अकादमिक वातावरण में अध्यापक–शिक्षा ग्रहण करने वाले अध्यापक अपने विद्यालय के बालकों के व्यक्तित्व का श्रेष्ठ निर्माण कर सकेंगे। उचित मनोबल तथा समायोजन के अभाव में शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षा–शिक्षकों में हीन भावनाएं उत्पन्न हो जाती हैं। इस अध्ययन से उनके शैक्षिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त होगा। जिससे वे समाज में अपना स्तर

*वरिष्ठ प्रवक्ता, ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई), संगरिया–335063, राजस्थान
**प्राचार्य, बालाजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, रंगबाड़ी, कोटा, राजस्थान

कायम करने में सफल होगें। बालक–बालिकाओं के निम्न शैक्षिक स्तर तथा दब्बु व्यक्तित्वों के निर्माण के लिए अध्यापक–शिक्षा का वातावरण पूरी तरह जिम्मेदार है। इसमें सुधार के लिए भी जानकारी अनुसंधान के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है जिन्हें दूर कर उनके शैक्षिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। दूसरे इस समस्या की ओर अभी तक शोधकर्त्ताओं का ध्यान भी नहीं गया है। इसलिए अध्यापक–शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए इनके अकादमिक वातावरण, अध्यापक मनोबल तथा समायोजन को जानना तथा तदनुरूप सुझाव पेश करना अत्यावश्यक है।

शोध उद्देश्य

शोध विषय की प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार किया गया–

1. राजस्थान में स्थित शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों के वातावरण का निम्नांकित क्षेत्रों में अध्ययन करना–
   (अ) शैक्षिक वातावरण
   (ब) शिक्षकों का मनोबल
   (स) अध्यापकों का समायोजन
2. राजकीय, अनुदानित व गैर–अनुदानित शिक्षा–महाविद्यालयों के वातावरण की निम्नांकित क्षेत्रों में परस्पर तुलना करना–
   (अ) शैक्षिक वातावरण
   (ब) शिक्षकों का मनोबल
   (स) अध्यापकों का समायोजन
3. राजस्थान में स्थित शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों के वातावरण का निम्नांकित क्षेत्रों में सुधार की संभावनाओं का अध्ययन करना–
   (अ) शैक्षिक वातावरण
   (ब) शिक्षकों का मनोबल
   (स) अध्यापकों का समायोजन
4. शोध क्षेत्र में भावी शोध संभावनाओं का अध्ययन करना।

परिसीमन

इस अनुसंधान कार्य को राजस्थान राज्य के राजकीय, अनुदानित एवं गैर–अनुदानित शिक्षा–महाविद्यालयों तक सीमित किया गया है। जिसमें महिला शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालय एवं सह–शिक्षा वाले शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों का चयन किया गया है। न्यादर्श चयन यादृच्छिक विधि द्वारा निम्नतया किया गया–

कुल न्यादर्श

क्र. सं.	महाविद्यालय प्रकार	संख्या	प्रबन्धक संचालक	प्रबन्धक प्राचार्य	प्राध्यापक महिला	प्राध्यापक पुरूष	विद्यार्थी महिला	विद्यार्थी पुरूष
1.	राजकीय	2	–	2	4	4	30	600
2.	अनुदानित	5	5	5	10	10	75	150
3.	गैर–अनुदानित	10	10	10	20	20	150	300
योग		**17**	**15**	**17**	**34**	**34**	**255**	510

विधि, प्रविधि एवं उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में ''सर्वेक्षण विधि'' का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्ता ने सांख्यिकीय प्रविधि यथा प्रतिशत, सहसंबंध, मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इसमें अकादमिक वातावरण मापनी, शिक्षक मनोबल मापनी, शिक्षक समायोजन मापनी, साक्षात्कार अनुसूची एवं क्षेत्र निरीक्षण प्रपत्र का प्रयोग किया गया।

मुख्य शोध निष्कर्ष

इस अध्ययन में जो शोध निष्कर्ष प्राप्त हुए, उनमें से मुख्य शोध निष्कर्ष निम्नांकित हैं–

(1) महाविद्यालयों में भौतिक संसाधन स्थिति

1. सभी शिक्षा महाविद्यालयों के पास मानदण्डानुरूप प्राचार्य कक्ष, सभाकक्ष एवं कक्षाकक्ष उपलब्ध है।
2. मात्र राजकीय एवं अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों में ही संगीत कक्ष, उद्योग कक्ष, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, कार्यानुभव प्रयोगशाला, संगीत कक्ष पर्याप्त एवं सुव्यस्थित पाये गये जबकि गैर–राजकीय शिक्षा महाविद्यालयों में इसका प्रतिशत निम्न का स्तर पाया गया है।
3. गैर–राजकीय शिक्षा महाविद्यालयों में तकनीकी प्रयोगशाला, विज्ञान प्रयोगशालाओं की उपलब्धता मात्र 42.86 ही पायी गयी, जिसमें सुधार अपेक्षित है।
4. कम्प्युटर शिक्षा की स्थिति राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों में शत–प्रतिशत ठीक पायी गयी जबकि गैर–राजकीय शिक्षा महाविद्यालयों में यह प्रतिशत 78.57 पाया गया।
5. सभी महाविद्यालयों में पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध है किन्तु मात्र तीन महाविद्यालयों में ही अलग वाचनालय कक्ष की सुविधा उपलब्ध है।

6. स्टॉफ हेतु पृथक् कक्ष की स्थिति राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों में शत–प्रतिशत ठीक पायी गयी जबकि गैर–राजकीय शिक्षा महाविद्यालयों में यह प्रतिशत 85.71 पायी गयी।
7. चयनित महाविद्यालयों में से राजकीय महाविद्यालयों में ही पर्याप्त शौचालय, खेल मैदान उपलब्ध है, जबकि खेल मैदान संबंधी शर्तों को अनुदानित महाविद्यालयों में 85.71 प्रतिशत तथा गैर–अनुदानित में 78.57 प्रतिशत पूरा किया है।

(2) स्टॉफ आवास व्यवस्था

1. अध्ययन में लिये गये सभी राजकीय व अनुदानित महाविद्यालयों में ही प्राचार्य आवास गृह है जबकि गैर–अनुदानित में यह स्तर 42.86 प्रतिशत ही है।
2. प्राध्यापक वर्ग, प्रशासनिक कर्मचारियों के आवास गृह व्यवस्था का स्तर राजकीय, अनुदानित, गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों अपर्याप्त उपलब्धता पाई गई।

(3) फर्नीचर, पुस्तकें, कम्प्युटर एवं दृश्य–श्रृव्य उपकरण आदि की उपलब्धता

1. अध्ययन हेतु लिये गये अध्यापक–शिक्षा महाविद्यालयों में से गैर–अनुदानित को छोड़कर सभी के पास अपेक्षित मात्रा में शैक्षिक जर्नल्स उपलब्ध पाये गये है, गैर–अनुदानित में यह स्तर 82.86 पाया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में लिये गये प्रायः सभी शिक्षा महाविद्यालयों में टेलीविजन, टेप–रिकॉर्डर पाये गये। केवल गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में यह स्तर 85.71 पाया गया।
3. सीसीटीवी, ओवरहैड प्रोजेक्टर, स्ट्रिप प्रोजेक्टर, फोटोस्टेट (जिरोक्स), वीसीआर की सुविधा राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों में शत–प्रतिशत जबकि गैर–अनुदानित में 15 प्रतिशत पायी गयी।
4. इन्टरकोम सुविधा राजकीय अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों में 50 प्रतिशत में ही पायी गयी है, जबकि गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में यह सुविधा बहुत कम पायी गयी।

(4) महाविद्यालयों में मानवीय संसाधन स्थिति

1. अध्ययन में लिये गये महाविद्यालयों में से कार्यवाहक प्राचार्य नियुक्त का सर्वाधिक प्रतिशत 66.67 अनुदानित महाविद्यालयों में पाया गया, जबकि राजकीय एवं गैर–अनुदानित में इस प्रकार की प्राचार्य नियुक्तियां बिल्कुल नहीं की गयी हैं।
2. प्रोफेसर पद पर केवल राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों में ही नियुक्ति पाई गई।
3. प्रत्येक महाविद्यालय ने एनसीटीई के नियमानुसार पर्याप्त नियुक्तियां कर रखी है किन्तु अधिकांश नियुक्तियां अस्थायी प्रकृति की पायी गयी।
4. अनुदानित एवं गैर–अनुदानित महाविद्यालयों कम नियुक्तियां पायी गयी, किसी भी महाविद्यालय में कार्यानुभव शिक्षक कार्यरत् नहीं पाये गये।
5. प्रायः प्रत्येक अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त किया हुआ पाया गया किन्तु केवल अनुदानित एवं गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में ही पुस्तकालय सहायक नियुक्त है।
6. अध्ययन के लिए चयनित राजकीय महाविद्यालयों में कम्प्युटर अनुदेशक नियुक्त नहीं किये गये है जबकि अनुदानित एवं गैर अनुदानित में यह क्रमशः 50 प्रतिशत व 21.43 प्रतिशत स्तर पाया गया।

(5) अकादमिक वातावरण

1. राजकीय शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत स्टॉफ सदस्यों में मनोवैज्ञानिक रूप से भय की स्थिति के लिए 11.54 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति प्रकट की है। अनुदानित महाविद्यालयों में यह स्तर 43.84 प्रतिशत तथा गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में यह स्तर सर्वाधिक अर्थात् 73.08 प्रतिशत पाया गया।
2. शिक्षण अभ्यास कार्य के दौरान निरीक्षण की स्थिति राजस्थान के प्रायः सभी शिक्षा महाविद्यालयों में स्तरीय नहीं है सभी महाविद्यालयों में यह स्तर सामान्य से भी निम्न पाया गया।
3. प्रायः राजस्थान में स्थित शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यारंभ प्रातःकालीन प्रार्थना सभा से ही होता है तथापि अभ्यास शिक्षण अथवा अन्य प्रायोगिक अभ्यास के समय इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है।

4. शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों में इण्डोर एवं आउटडोर खेलकूद व्यवस्था के संबंध में राजकीय महाविद्यालयों में ही स्तर सर्वोच्य है।
5. वनशाला शिविरों का आयोजन राजकीय महाविद्यालयों द्वारा नहीं करवाया जा रहा है। मात्र अनुदानित एवं गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों द्वारा इस संबंध में प्रयास किया जा रहा है, जो कि अत्यल्प है। यह 12.30 से 30.00 प्रतिशत के मध्य ही स्तर सहमति प्राप्त कर पाया है।
6. दल शिक्षण, अनुवर्ती शिक्षण, ब्लॉक शिक्षण अभ्यास आयोजन को राजकीय, अनुदानित एवं गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों ने संतोषजनक नहीं माना जा सकता है।
7. मनोवैज्ञानिक परीक्षण करवाने की स्थिति राजस्थान के प्रायः सभी शिक्षा महाविद्यालयों में सामान्य से निम्न ही नहीं है।
8. शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों में प्रदर्शन पाठ, समालोचनात्मक पाठ, निदानात्मक एवं उपलब्धि परीक्षण की व्यवस्था करने को गंभीरतापूर्वक आयोजित करवाने के संबंध में सभी महाविद्यालयों में ही स्तर संतोषजनक पाया गया है।
9. अध्ययन हेतु चयनित इन महाविद्यालयों के लगभग 62.30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वर्तमान अध्यापक–शिक्षा संस्थानों द्वारा उच्च योग्यता वाले अध्यापक बनाने के लिए सहमति प्रकट की है। गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में यह स्तर सामान्य से बहुत कम पाया गया।

(6) अध्यापक मनोबल

1. राजकीय महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों द्वारा व्यक्त किये जाने वाले विचारों का दूसरों के द्वारा पूरा सम्मान किया जाता है, ऐसा वे अधिकांशत् अनुभव करते है।
2. सभी महाविद्यालयों में औसत से कुछ निम्न स्तर पर स्टॉफ सदस्यों ने महाविद्यालय के नियम प्राध्यापकों की स्वतंत्र निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करने तथा स्वयं के महाविद्यालय को अन्य महाविद्यालयों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ होना स्वीकार किया है।
3. अधिकांश शिक्षक–शिक्षकों ने अतिरिक्त कार्य को प्रबन्ध समिति/सरकार/ प्राचार्य के दबाव में पूरा करने तथा प्रधान (प्राचार्य) के साथ बेहतरीन समायोजन तथा अतिरिक्त कार्य को सहर्ष स्वीकार करने की बात कही है।
4. सभी शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षा–शिक्षकों ने अपने कार्य से संतुष्टि प्रकट की है। किन्तु राजकीय महाविद्यालयों के 88.47 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें दिया गया कार्य भार अधिक है।
5. अकादमिक अभिवृद्धि के लिए आगे अध्ययन हेतु संस्था प्रधान द्वारा मदद नहीं किये जाने अर्थात् संस्था प्राचार्य द्वारा अनेक कारणों को प्रस्तुत कर आगे अध्ययन के लिए समय देने से मना कर देने की बात कही है।
6. राजकीय महाविद्यालयों में औसत स्तर पर शिक्षा–शिक्षकों ने अध्यापक प्रशिक्षण कार्य को अत्यधिक पुण्य एवं सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करने वाला व्यवसाय माना है। अनुदानित महाविद्यालयों में उच्च व गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में यह प्रतिशत निम्न पाया गया है।

(7) समायोजन

1. यदाकदा उनके मन में घर छोड़कर भागने की इच्छा होने को 21.42 प्रतिशत उत्तरदाता ही स्वीकार करते है तथा 53.33 प्रतिशत प्राध्यापक अपने कार्य व्यवहार से माता–पिता एवं परिवार की संतुष्टि के लिए सहमत पाये गये, जो कि संतोषजनक है।
2. शिक्षा महाविद्यालयों में सामान्य स्तर पर उत्तरदाताओं ने पारिवारिक झगड़ों के लिए सहमति प्रकट की है जो कि पारिवारिक समायोजन की अच्छी स्थिति को प्रकट नहीं करता है।
3. सामान्य से अधिक प्रतिशत 57.00 उत्तरदाताओं का मानना है कि वे अन्य लोगों से जल्दी डरते नहीं है। इसी भांति 58.55 प्रतिशत माता–पिता के साथ विचार मिलने के प्रति आश्वस्त है।
4. अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उनके घर में सदस्यों में अधिक कठोरता नहीं रखी जाती है।
5. स्वास्थ्य संबंधी समायोजन को मापने के लिए

ऑखों की क्षमता के लिए प्रकट कथन पर भी औसत दर्जे की प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है।

6. भोजन ग्रहण करने की नियमितता एवं समयबद्धता के लिए 46.49 प्रतिशत एवं नींद लेने की निश्चित समयबद्धता के लिए 42.36 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति प्रकट की है। इनके लिए औसत दर्जे की स्थिति प्राप्त हुई है।
7. उत्तरदाताओं ने दूसरों की सफलता एवं खुशी को देखकर ईर्ष्या प्रकट करने के लिए 79.58 प्रतिशत स्तर पर असहमति प्रकट की है। मात्र 14.24 ने इस संबंध में सहमति तथा 6.18 प्रतिशत ने अनिश्चितता प्रकट की है।

(8) शिक्षक मनोबल व समायोजन संबंधी तुलनात्मक स्थिति

1. राजकीय व अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में समेकित मनोबल में .05 स्तर पर अन्तर सार्थक पाया गया है।
2. राजकीय व गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों का समेकित मनोबल .05 स्तर पर अन्तर संयोगवश न होकर सार्थक पाया गया है।
3. समेकित मनोबल का .05 स्तर पर अनुदानित व गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में अन्तर संयोगवश न होकर सार्थक पाया गया है।
4. राजकीय व अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों के समायोजन में 0.05 स्तर पर अन्तर सार्थक न होकर संयोगवश है।
5. राजकीय व गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में समायोजन .05 स्तर पर अन्तर संयोगवश न होकर सार्थक पाया गया।
6. प्राध्यापकों में समायोजन .05 स्तर पर अनुदानित व गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों में अन्तर संयोगवश न होकर सार्थक पाया गया है।

शोध सुझाव

1. प्राचार्य कक्ष, सभाकक्ष एवं कक्षाकक्ष आदि को पर्याप्त तकनीकी संसाधन उपलब्ध करवाया जाना आवश्यक है।
2. प्रत्येक महाविद्यालय ने एनसीटीई के नियमानुसार प्राचार्य, प्रोफेसर, रीडर, प्राध्यापक, कार्यानुभव शिक्षक, शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों, क्राफ्ट/संगीत/ कम्प्युटर अध्यापकों की नियुक्ति पर्याप्त नियुक्तियां पर्याप्त व स्थायी प्रकृति की करवायी जानी चाहिए।
3. राजकीय शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों की भांति अनुदानित एवं गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में भी प्राचार्यो की नियुक्तियां पूर्णत् स्थायी की जानी चाहिए। इससे शिक्षक–शिक्षा में गुणात्मकता व जिम्मेदारी का भाव अधिक बन सकेगा।
4. शिक्षक–शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों के लिए प्रायोगिक कार्यो में कार्यानुभव/एसयुपीडब्ल्यु में शामिल होना अनिवार्य होना चाहिए।
5. सूक्ष्म शिक्षण व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने के लिए तकनीकी विधाओं के उपयोग को सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।
6. वनशाला शिविरों का आयोजन, दल शिक्षण, अनुवर्ती शिक्षण, ब्लॉक शिक्षण अभ्यास आयोजन को सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।
7. शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालयों में नियोजित अनुदेशन, टेलीविजन अनुदेशन, कम्प्युटरीकृत अनुदेशन करने, ट्यूटोरियल कक्षाओं, मस्तिष्क उद्दोलन कक्षाओं, व्यवस्था उपागम का आयोजन के संबंध में सभी महाविद्यालयों में ही ध्यान दिया जाना आवश्यक है।
8. पुस्तकालय अध्ययन हेतु व्यवस्था, क्रियात्मक अनुसंधान व्यवस्था, शैक्षिक भ्रमण व पिकनिक आयोजित करवाने, छात्रावास सांस्कृतिक संध्या, वार्षिकोत्सव आयोजन, अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन को प्रभावी बनाना अनिवार्य होना चाहिए।
9. पत्र वाचन सत्र आयोजित करने, मनोवैज्ञानिक परीक्षण करवाने, प्रदर्शन पाठ, समालोचनात्मक पाठ, निदानात्मक एवं उपलब्धि परीक्षण की व्यवस्था करने को गंभीरतापूर्वक आयोजित करवाने के संबंध में निर्देशित किया जाये।
10. शिक्षा महाविद्यालय में विद्यार्थियों से प्राध्यापवक जन को मिलने वाले सम्मान को अधिक मूल्यपरक शिक्षण की व्यवस्था करवायी जाये तथा अध्ययन करके अध्यापन करवाने पर बल दिया जाये।
11. गैर–अनुदानित में वेतन भुगतान पर सरकार को नियंत्रण करना चाहिए तथा प्रबन्ध समितियों द्वारा किये जाने वाले शोषण से मुक्ति दिलवायी जाये।

12. अनुदानित एवं गैर–अनुदानित महाविद्यालयों में निजी प्रबन्धकों का अकादमिक कार्यों में हस्तक्षेप कम किया जाये, ताकि कार्य समय से पूरा किया जा सके। कार्य का समयबद्ध निर्धारण किया जाये तथा तदनुरूप ही कार्य प्रदान किया जाये।
13. प्राध्यापक अपने कार्य व्यवहार से माता–पिता एवं परिवार को संतुष्टि दिला सके, इस हेतु वेतन आदि पर सरकार का पूरा नियंत्रण होना चाहिए ताकि पारिवारिक समायोजन की अच्छी स्थिति बनी रहे।
14. अधिकांशतः अध्ययन–अध्यापन कार्य शांति व शोरगुल रहित स्थान पर होना चाहिए। मान्यता के समय सरकार को इस बात की अच्छी तरह जांच कर लेनी चाहिए। अच्छे स्वास्थ्य समायोजन के लिए योग को अनिवार्यत् लागू किया जाये।

संदर्भ पुस्तकें

मिश्र, राजेन्द्र, (2006) 'अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया', नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज।

शर्मा, प्रभा, नाटाणी, (2006) प्रकाश नारायण, 'शैक्षिक तकनीकी और कक्षा–कक्ष प्रबंधन', जयपुर, माया प्रकाशन मंदिर।

Best, J.W. (1981), Research in Education, New Delhi, Prentice Hall of India.

UNESCO (1998), Teacher & Teaching World. World Education Report Pairs.

Allison, G. M. (2007), "Types of Student and Teacher Behaviours Associated with Teacher Stress", Teaching and Teacher Education: An International Journal of Research and Studies, Vol.23 (45),pp 625-640.

Belasco, J. A. and Alutto, J. A. (1972), "Organizational Climate and Teachers", International Journal of Educational Development, Vol. 15 (2), pp 141 - 153.

Mangal, S.K. (1984), "Measuring Adjustment of Teachers", Journal of Indian Education, Vol. 10 (4), pp 39-42.

Mangal, S.K. (1996), "Teacher Adjustment Inventory," National Psychological Corporation, 4/230, Kacheri Ghat, Agra.

Norman, E. (1980), "Teacher Success and Personality Adjustment: A Study of Teaching Behaviour of Teachers in Relation to their Personality Adjustment," The Progress of Education, Vol.59 (8), pp-187-89.

CABE/RIBA, 21st Century Schools: Learning Environments of the Future, (2004), available at:http://www.building futures.org.uk, accessed 7.9.04.

Horne-Martin, (2002) The Classroom Environment and its Effects on the Practice of Teachers, Journal of Environmental Psychology, 22, 1-2, 139-156,

Moos, R H, (1979), Evaluating Educational Environments, Jossey-Bass.